विज्ञान एवं तकनीक और गढ़वाल हिमालय की महिलायें

बीज शब्द : विज्ञान, हिमालय, महिला के क्रियाकलाप, तकनीक।

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

किसी भी क्षेत्र के निवासियों की जीवनशैली पर वहाँ के भौगोलिक परिवेश का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों के कारण पर्वतीय क्षेत्र के निवासियों का जीवन अपेक्षाकृत अधिक संघर्षशील रहा है। इस पर भी यहाँ पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में संघर्ष करने की शक्ति अधिक है। गढ़वाल की मातृशक्ति अर्थव्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक चेतना की धुरी भी रही है। गढ़वाल के सन्दर्भ में देखे तो यहाँ की महिलाओं द्वारा अपनी क्षमता तथा सक्रियता का परिचय समय-समय पर दिया गया। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि विज्ञान व तकनीक का प्रभाव यहाँ की महिलाओं के क्रियाकलापों को किस प्रकार और किस स्तर तक प्रभावित कर रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रदत्तों के द्वारा प्रदत्त संकलन किया गया है।

अत: मेरे द्वारा गढ़वाल हिमालय की महिलाओं पर विज्ञान एवं तकनीक के प्रभाव के अन्तर्गत अध्ययन का विवरण इस शोधपत्र में किया गया है।

शालिनी श्रीवास्तव
शोध छात्रा,
मानवविज्ञान विभाग,
हे० न० ब० ग० विश्वविद्यालय।

मानव अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है और श्रेष्ठता के कारण उसके शरीर की कुछ विशेषतायें हैं, जैसे- विकसित मस्तिष्क, विकसित वाणी, हाथ-पाँव की विशिष्ट रचना, केन्दित की जाने वाली दृष्टि एवं घुमाई जा सकने वाली गर्दन आदि। इन विशेषताओं के कारण ही केवल मानव ही संस्कृति का निर्माता बन सका। अपने उद्विकासीय काल में एक समय वह पशुओं के समान ही था, किन्तु अपनी शारीरिक विशेषताओं के कारण वह पशु जीवन को बहुत पीछे छोड़ आया और अनेक अद्भुत आविष्कारों को जन्म देकर उसने सभ्य और सुसंस्कृत प्राणी की संज्ञा ग्रहण की है। मानव संस्कृति का प्रथम अध्याय लिखने वाले मानव वास्तव में पूर्ण मानव न होकर मानवस मानव थे जिन्होने पहली बार यह सिद्ध किया कि मानव अन्य प्राणियों की तुलना में उच्च है तथा प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की क्षमता रखता है। मानव निर्मित उपकरण उसकी विचार शक्ति की देन हैं। जिसे उसने अपनी यांत्रिक, औद्योगिक और वैज्ञानिक क्षमताओं के आधार पर रूप दिया है। मानव की इस तकनीक प्रगति की कहानी का इतिहास बहुत लम्बा है।[1] आदिमानव ने सभ्यता के आरंभ में तकनीक विकसित कर अपने दो मित्रों को साधा। कुल्हाड़ी, भाले की नोंक और तीरों के सिरे बनाने के लिये चकमक पत्थरों से पहचान बनी, क्योंकि यह लोहे की तरह सख्त होता है और पतली तीखी धार बनाने के लिये इसे घिसा जा सकता है। दूसरी तकनीक विकसित हुई आग पैदा करने की। नवपाषाणकाल के दौरान, यही कोई 5-6 हजार वर्ष पहले तकनीक विकास में पहिया जुड़ जाने से मानव सभ्यता की गति तीव्र हो गई। इस आरंभिक तकनीक विकास से मानव सभ्यता के इतिहास में ऐसे केन्द्र रच गये, जिनके अवशेष भी कुतुहल पैदा करते हैं।

विज्ञान एवं तकनीक-

विज्ञान का अर्थ है ज्ञान प्राप्त करना एवं प्रक्रिया को समझना चाहे वह लैब में हो या माइक्रोस्कोपिक प्रक्रिया हो। विज्ञान कभी न समाप्त होने वाली सत्त प्रक्रिया है। यह अत्यन्त उपयोगी ज्ञान है, क्योंकि उसके द्वारा प्राप्त ज्ञान विश्वसनीय और वैध होता है। इसके उपयोग से नई तकनीक का विकास होता है जिससे हम विभिन्न बीमारियों और समस्याओं को हल कर सकते हैं।[2] भारत प्रायद्वीप में आदिमानव के अनेकानेक केन्द्रों के साथ करीब 7-8 हजार साल पुरानी मिहरगढ़ की सभ्यता प्रकाश में आई जिसमें सभ्यता व तकनीक विकास के कई महत्वपूर्ण सोपान उजागर हुये हैं। वैदिक काल में तीन साढ़े तीन हजार साल पुराने ग्रन्थों से तकनीक विकास के साहित्यिक प्रमाण मिलते हैं जब

खगोल, गणित, चिकित्सा और धातु विज्ञान के क्षेत्र में पर्याप्त विकास कर लिया गया था। ब्रह्मगुप्त, वराहमिहिर और आर्यभट्ट जैसे गणितज्ञ अपने समकालीन ज्ञान से बहुत आगे थे, जिनसे भारत प्रायद्वीप में तकनीक विकास को गति मिली। विज्ञान एवं तकनीक के माध्यम से संचार के क्षेत्र में आई क्रान्ति के फलस्वरूप आज विश्व परिवार ई-मेल, एस0 टी0 डी0, आई0 एस0 टी0 डी0 और इन्टरनेट के माध्यम के कारण भौगोलिक दूरियों को लांघतें हुये एक-दूसरे के एकदम निकट हो गया है। वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास से विश्व के विभिन्न भागों के लोग व्यावहारिक रूप से इतने निकट आ गये हैं कि तकनीक दृष्टि से विश्व को वैश्विक गाँव की संज्ञा दी जाने लगी है।

गढ़वाल हिमालय-

प्रकृति ने विश्व की सबसे अमूल्य धरोहर नैसर्गिक गुणों से युक्त इस राज्य को हिमालय की गोद में बसाया है, प्राचीनकाल से ही ऋषि-मुनियों तथा भगवान शिव पार्वती की तपस्थली, निवासस्थली के नाम से प्रसिद्ध यह देवभूमि हमेशा से शान्तिस्थल रहा है, पुराणों में केदारखण्ड व मानसखण्ड से मिलकर उत्तराखण्ड राज्य बना है, उत्तराखण्ड राज्य के लिये यहाँ की जनता ने लम्बे समय तक संघर्ष किया अन्ततः 28 अगस्त 2000 को राष्ट्रपति की मंजूरी के साथ ही इसके निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ और 9 नवम्बर 2000 को एक हिमालय राज्य उत्तराखण्ड का निर्माण हो गया। उत्तराखण्ड एक सीमावर्ती राज्य है। देश के 10 हिमालयी राज्यों में सबसे नया तथा जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा हिमालयी राज्य है।[3] इस राज्य का अधिकांश भाग हिमालय की पर्वतीय शाखाओं में स्थित है। इस कारण इस क्षेत्र को देवभूमि के नाम से जाना जाता है।

भारतीय संस्कृति का आरंभ हिमालय से होता है। हिमालय वह अकाल पुरुष है, जो सृष्टि के प्रारम्भिक काल से भू-मंडल के मध्य में स्थिर खड़ा है।[4] हिमालय भारत-भू को प्रकृति द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य उपहार है। अपनी रमणीयता से यह सदैव सहृदयों को आकर्षित करता रहा है।[5] हिमालय के पाँच खण्ड हैं, जिनमें से एक केदारखण्ड है। यही केदारखण्ड आधुनिक गढ़वाल है। प्राचीन काल से ही गढ़वाल अपनी भौगोलिक विशिष्टता के लिये प्रसिद्ध रहा है। गढ़वाल हिमालय में युगों से तीर्थयात्रियों, पर्यटकों व पर्वतारोहियों का आना-जाना रहा है। वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत में इस क्षेत्र को तपोभूमि माना गया है।[6]

गढ़वाल हिमालय की महिलायें-

मध्य हिमालय में स्थित गढ़वाल हिमालय का क्षेत्र अपनी प्राकृतिक और आध्यात्मिक धरोहर के लिये प्रसिद्ध रहा है। किसी भी क्षेत्र के निवासियों की जीवनशैली पर वहाँ के भौगोलिक परिवेश का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों के कारण पर्वतीय क्षेत्र के निवासियों का जीवन अपेक्षाकृत अधिक संघर्षशील रहा है। इस पर भी यहाँ पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में संघर्ष करने की शक्ति अधिक है। गढ़वाल की मातृशक्ति अर्थव्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक चेतना की धुरी भी रही है। गढ़वाल में नारी के प्रति दृष्टिकोण का स्वरूप पौराणिक एवं पारम्परिक रहा है, किन्तु गढ़वाल की भौगोलिक स्थिति, जनजातियों के नियम तथा परम्पराओं के अंबार पर संपूर्ण गढ़वाल की नारी को एक से मूल्यांकित नहीं किया जा सकता। गढ़वाल के सन्दर्भ में देखे तो यहाँ की महिलाओं द्वारा अपनी क्षमता तथा सक्रियता का परिचय समय-समय पर दिया गया। नारी द्वारा परिवर्तनशील समाज के साथ-साथ स्वयं को परिवर्तित करना सामाजिक नियमों के प्रति क्रान्तिकारी आन्दोलन था। समाज के किसी भी परिवर्तित बिन्दु के साथ समझौता करने के लिये नारी को वह मानसिक पृष्ठभूमि तैयार करती पड़ती है जिसके आधार पर वह समाज के लिये चुनौतीपूर्ण व्यक्तिव सिद्ध हो।[7]

उद्देश्य-

1. अध्ययन का उद्देश्य यह है कि हिमालय गढ़वाल की महिलाओं पर विज्ञान और तकनीक परिवर्तन के प्रभाव के स्त्रोत क्या हैं?
2. विज्ञान एवं तकनीक परिवर्तन के प्रभाव से इनके सामाजिक और सांस्कृतिक क्रियाकलापों में किस प्रकार परिवर्तन हो रहे हैं?

विज्ञान और तकनीक परिवर्तन के प्रभाव के स्त्रोत-

1. आवागमन के साधनों की सुगमता।
2. रेलवे, डाक, फैक्स इत्यादि की सुविधा।
3. टी0 वी0, मोबाइल, लैपटॉप/कम्प्यूटर की सुविधा।
4. इन्टरनेट आदि की सुविधायें।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास पर विज्ञान एवं तकनीक का प्रभाव-

शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल मंडल के तीन जिले टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल एवं रूद्रप्रयाग हैं। इन 3 जिलों में विभिन्न शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों की 300 महिलाओं के साक्षात्कार द्वारा किये गये क्षेत्रकार्य के आधार पर गढ़वाल हिमालय की महिलाओं पर विज्ञान एवं तकनीक के पड़ने वाले प्रभाव को प्रदर्शित किया गया है। जिसमें 200 महिलायें ग्रामीण क्षेत्रों से एवं 100 महिलायें शहर से चयन की गई हैं जो कि अलग-अलग आयु, धर्म और शैक्षिक स्तर से संबंधित हैं।

तालिका संख्या-१.

प्रश्न	ग्रामीण महिलायें		शहरी महिलायें	
	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं

1. क्या आपको लगता है कि विज्ञान एवं तकनीक माध्यमों ने आपके समाज और संस्कृति में बदलाव लाने में कोई भूमिका निभाई है?	93%	7 %	100 %	0 %
2. क्या आप विज्ञान एवं तकनीक जैसे- संचार साधनों से प्रभावित होती है?	89 %	11 %	99 %	1 %
3. क्या आप संचार साधनों का प्रयोग करती हैं?	95 %	5 %	100 %	0 %
4. संचार माध्यमों के कारण क्या आपके समाज की लड़कियाँ सही दिशा में जा रही है?	25 %	75 %	30 %	70 %

स्रोत-क्षेत्र अध्ययन की अवधि में अवलोकन पर आधारित

जैसा कि तालिका संख्या 1 के अनुसार प्रदर्शित हो रहा है कि कुल 300 महिलाओं ने विज्ञान एवं तकनीक से संबंधित अलग-अलग प्रश्नों पर अलग- अलग प्रतिक्रियायें दी हैं। प्रश्न संख्या 1 पर 93 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने और 100 प्रतिशत शहर की महिलाओं ने हाँ में जबकि 7 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने नहीं में उत्तर दिया। प्रश्न संख्या 2 पर 89 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने और 99 प्रतिशत शहर की महिलाओं ने हाँ में उत्तर दिया जबकि 11 प्रतिशत ग्रामीण एवं 1 प्रतिशत महिलाओं ने नहीं में उत्तर दिया। प्रश्न संख्या 3 में 95 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने एवं 100 प्रतिशत शहर की महिलाओं ने हाँ में तथा 5 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं ने नहीं में उत्तर दिया। प्रश्न संख्या 4 पर 25 प्रतिशत ग्रामीण एवं 30 प्रतिशत शहर की महिलाओं ने हाँ में तथा 75 प्रतिशत ग्रामीण और 70 प्रतिशत शहर की महिलाओं ने नहीं में उत्तर दिया।

निष्कर्ष-

गढ़वाल हिमालय की महिलायें आज स्वीकार करती हैं कि जिन कार्यो को करने में उन्हें दो से तीन घंटों या अधिक समय देना पड़ता था, आज वे कुछ मिनटों में समाप्त हो जाते हैं। जैसे शहर की अधिकांश महिलाओं के घरों में टी0 वी0, फ्रिज, वाशिंग मशीन, कूलर, कम्प्यूटर/लैपटॉप, मिक्सी इत्यादि वस्तुयें आवश्यक आवश्यकता के रूप में मिलीं। विज्ञान एवं तकनीक में होने वाली निरन्तर प्रगति के कारण अब उनमें पहले से अधिक जागरुकता और पहले से अधिक समय मिलने के कारण वे अब शिक्षा और नौकरी को, विवाह की अपेक्षा प्राथमिकता दे रही हैं और विधवा विवाह, पुनर्विवाह को स्वीकृत प्रदान कर रही हैं। ये जातिबन्धन के बन्धन से मुक्त होकर अपनी प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर रहीं हैं। वहीं ग्रामीण महिलाओं के घरों में टी0 वी0, पंखा, खाना बनाने की गैश एक आवश्यकता के रूप में मिली। ग्रामीण महिलायें यह मानते हुये भी कि विज्ञान एवं तकनीक ने उनके समाज और संस्कृति में बहुत परिवर्तन किए हैं फिर भी आज भी उन्हीं पुरानी रुढ़ियों में जकड़ी हुई हैं। हालांकि ग्रामीण महिलायें आज पहले की अपेक्षा अधिक जागरूक हो चुकी हैं, किन्तु इनमें से महिलाओं का कुछ प्रतिशत ही आज अपने भविष्य का चुनाव कर सकने की हिम्मत रखती हैं वह भी कड़े विरोधों के बाद। संचार माध्यमों से प्रभावित होने के संबंध में भी ग्रामीण महिलाओं का प्रतिशत शहर की महिलाओं के प्रतिशत नीचा है जो यह प्रदर्शित करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलायें संचार माध्यमों जैसे- टी0 वी0, फोन, इन्टरनेट, कम्प्यूटर इत्यादि का कम प्रयोग करती हैं वहीं शहर की वे महिलायें जो इन साधनों का प्रयोग करती हैं और इनसे प्रभावित भी होती हैं उनका प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं से 5 और10 प्रतिशत अधिक है। ग्रामीण महिलाओं द्वारा संचार साधनों का कम प्रयोग करने के विभिन्न कारण हो सकते है जैसे- ग्रामीण महिलाओं की भौगोलिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, शैक्षिक स्थिति, उम्र और घर के कार्यो को अधिक समय देना। गढ़वाल मण्डल में बहुत से ग्रामीण क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ पर संचार माध्यमों का संजाल उतने विस्तृत और गहरे तरीके से नहीं फैला है जितना शहर के क्षेत्रों में। ग्रामीण महिलाओं की जीवनशैली इस प्रकार की है कि वे संचार माध्यमों के प्रयोग के स्थान पर घर-परिवार के अन्य कार्यों को प्राथमिकता देती हैं। इसके बावजूद ग्रामीण महिलायें सबसे अधिक टी0वी0,मोबाइल, इन्टरनेट तथा समाचार-पत्रों का उपयोग करती हैं और इनसे प्रभावित भी होती हैं पर इनमें भी उन महिलाओं का प्रतिशत अधिक है जो 18-35 उम्र की हों और जिनका शैक्षिक स्तर इण्टर-ग्रेजूएशन या इससे अधिक हो। इससे अधिक उम्र की महिलायें इण्टरनेट और टी0 वी0 की अपेक्षा लोगों से मिलकर बातचीत करने को प्राथमिकता देती हैं। इसके विपरीत शहर की महिलायें संचार साधनों से बहुत प्रभावित हो रहीं हैं। वे मानती हैं कि संचार माध्यमों (विशेषकर इन्टरनेट) के कारण हम घर बैठे देश-दुनिया की और विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। फेसबुक द्वारा अपने छूटे हुये दोस्तों या दूर बैठे लोगों से फिर से सम्पर्क कर सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी संचार माध्यमों के कारण उल्लेखनीय प्रगति हो रही है। शहर की महिलायें संचार माध्यमों का इस्तेमाल करती हैं और देश-विदेश की जानकारी रखने के साथ-साथ स्वयं को घर की चारदीवारी से मुक्त कर रोजगार में व्यस्त है। जहाँ विज्ञान एवं तकनीक से गढ़वाल की महिलाओं सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है वहीं इसके द्व ारा इन कुछ क्षेत्रों में नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिल रहे हैं। जैसे- सर्वे में यह बात स्पष्ट रूप से सामने आई कि विज्ञान एवं तकनीक साधनों के प्रयोग से यहाँ की लड़कियों एवं महिलाओं पर सकारात्मक से अधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। यहां की ग्रामीण महिला हो या शहर की सभी ने समान रूप से यह स्वीकार किया। संचार साधनों के प्रयोग से इस समाज की लड़कियाँ सही दिशा में नहीं जा रही हैं अर्थात वे इनका प्रयोग उचित रूप से न करके अनुचित तरीके से कर रही हैं जैसे- टी0 वी0 और इंटरनेट

के प्रयोग से उनकी रूचि ग्लैमर में अधिक हो रही है। कुछ लड़कियाँ या महिलायें अपने इच्छा पर निर्भर हो रही हैं जिससे वे अपने अभिभावकों की बातों पर ध्यान नहीं देतीं। टी0 वी0, इंटरनेट, कम्प्यूटर पर अधिक समय देने के कारण उनकी पढ़ाई, स्वास्थ्य, खान-पान, पहनावा सभी पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। फेसबुक ने उन्हें इंटरनेट के जरिये विस्तार तो दिया है, किन्तु अपने ही घरों में अपने लोगों के बीच भी उनकी अलग दुनिया है जो उनके कम्प्यूटर/लैपटॉप और मोबाइल से जुड़ी हुई है। ऐसी महिलायें इंटरनेट के माध्यम से दश-दुनिया से संबंधित बहुत सी बातों की जानकारी कर लेती है किन्तु अपने घर में रहने वाले बुजुर्गों का हाल जानने की उनकों न तो रूचि है न तो समय। अध्ययन क्षेत्र में लिये गये साक्षात्कार के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि गढ़वाल हिमालय की महिलायें यद्यपि पहाड़ी क्षेत्र में निवास करती हैं चाहे वह शहर की महिलायें लगभग समान रूप से यह स्वीकार करती हैं कि विज्ञान एवं तकनीक ने उनके समाज एवं संस्कति में बदलाव लाने में मुख्य भूमिका निभाई है।

सन्दर्भः-

1. चौबे, डा0 रमेश, पुरातात्विक मानव विज्ञान, प्रकाशक, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, प्रथम संस्करण,1991, पृ0- 57
2. http://undsci. berkeley.edu /article /whatisscience_01
3. क्रानिकल इयर बुक 2012, पृ0-413
4. रावत, शिवराज सिंह, केदार हिमालय और पंचकेदार, 2006, पृ0- 38
5. अग्रवाल, डॉ0 चन्द्र मोहन, युगयुगीन उत्तरांचल, 2001, पृ0- 1
6. बेंजवाल, रमाकान्त, गढ़वाल हिमालय- समाज, संस्कृति, यात्रा पर्यटन का परिचयात्मक विवरण, 2002, पृ0- अपनी बात
7. नौटियाल, डा0 कुसुम, गढ़वाली नारी : एक लोकगीतात्मक पहचान, प्रकाशक, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण,1982, पृ0- 17-18, 45

Continued from Page No. 56

Assessment of interventions made to meet the educational needs of SC/ST children in SSA. In A.B.L.Srivastava & Neeru Bala (Ed.). Abstracts of Research Studies in Elementary Education(2003-2009). Retrieved from ssa.nic.in/research-studies/ABSTRACTS-MAG.PDF

4. Education for all global monitoring report(2007). Strong foundations:early childhood care and education. Washington D.C.: UNESCO. In Anita Nuna (2009). Secondary education for girls-challenges ahead. Journal of Indian education. 34(4),19-20.
5. UNICEF(2003).The state of the world's children 2004.The Primary Teacher. 29(3-4),58.
6. Agarwal, Archana (2001). Study of non-enrolment and dropout among girls at primary level. Indian Educational Abstracts(2002). 2(1), 43-44.
7. Dua, Radha (2004). Familial forces influencing the girl child schooling. Indian Educational Abstracts(2005). 5(1 & 2), 124.
8. Nuna, Anita (2009). Secondary education for girls-challenges ahead. Journal of Indian Education.34(4), 21
9. Ministry of Human Resource and Development[MHRD](n.d.). Chapter on Elementary Education (SSA & Girls Education) for the XIth Plan Working Group Report(2007-12):Universalisation of elementary education. New Delhi: MHRD(Department of School Education & Literacy), GOI. From http://planningcommission.gov.in/plans/planrel/11thf.htm/EleEdu_XITHPlanReport.pdf
10. Narula, Manju (2009). Education, gender, access and participation to elementary education in Bundelkhand region of Uttar Pradesh. New Delhi: MHRD(Department of Higher Education),GOI. Retrieved from http://www.dise.in/Downloads/Use%20of%20Dise%20Data/Manju%20Narula.pdf

Abbreviations

DPEP	District Primary Education Programme
KGBV	Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya
NPEGEL	National Programme of education for girls at elementary level
SSA	Sarva shiksha abhiyan